

संवाद

जीवन जीना स्वयं में निरंतर ज्ञान अर्जन की प्रक्रिया है लेकिन व्यवस्थित अध्ययन हम जीवन के निर्धारित समय में ही करते हैं। प्रारंभिक शिक्षा, माध्यमिक शिक्षा एवं उच्च शिक्षा की तरह ही पूर्व प्राथमिक शिक्षा भी महत्वपूर्ण है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने पूर्व प्राथमिक शिक्षा को महत्वपूर्ण मानते हुए शैक्षिक ढाँचे में परिवर्तन किया गया है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति के सफल क्रियान्वयन और नए शैक्षिक सत्र की शुरुआत के लिए सभी पूरे उत्साह के साथ तैयार हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के क्रियान्वयन की जिम्मेदारी शिक्षकों पर भी है। अतः इसकी समझ बनना बहुत ज़रूरी है और यह समझ तभी बनेगी जब हम इसके बारे में पढ़ेंगे, चर्चा करेंगे और इसे लागू करने में अपना योगदान देंगे।

प्राथमिक शिक्षक पत्रिका में हम राष्ट्रीय शिक्षा नीति से जुड़े लेख शामिल करते रहे हैं और इस अंक में कुल 13 लेखों को सम्मिलित किया गया है जिनमें एक पुस्तक समीक्षा भी है। इनमें से कुछ लेख राष्ट्रीय शिक्षा नीति और उसके सरोकारों से संबंधित हैं, जैसे— ‘राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 और दिव्यांग विद्यार्थियों की शिक्षा’, ‘सुविधा वंचित समूहों एवं दिव्यांग बच्चों की शिक्षा पर कोविड-19 का प्रभाव’ और ‘राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में महात्मा गांधी के शैक्षिक विचारों का प्रतिबिंबन’। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में खिलौना आधारित शिक्षण प्रक्रिया पर जोर भी दिया गया है इससे संबंधित भी दो लेख क्रमशः ‘खेल और खिलौने— बच्चों के विकास तथा उनके सीखने की शैली’ एवं ‘खिलौने— सीखने की नींव विकसित करने में मददगार’ पत्रिका में शामिल हैं। भारत सरकार द्वारा वर्ष 2021 में 27 फरवरी से 2 मार्च तक डिजिटल माध्यम से ‘द इंडिया टॉय फ़ेयर 2021’ का सफलतापूर्वक आयोजन किया गया, जो अपने आप में एक अनूठा अनुभव था।

बच्चे के प्रारंभिक वर्ष उसके जीवन के बेहद महत्वपूर्ण वर्ष होते हैं। इन वर्षों में बच्चे के विकास से लेकर उसके स्वास्थ्य, दिनचर्या और उसकी शैक्षिक आवश्यकताओं का ध्यान रखा जाना चाहिए। ‘प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा एवं शिक्षक प्रशिक्षण— कुछ मुद्दे’ लेख तथा ‘अंडरस्टैंडिंग चाइल्डहुड एंड एडोलसेंस’ पुस्तक समीक्षा पाठक की बाल विकास से संबंधी महत्वपूर्ण अवधारणाओं की समझ को बढ़ाने में सहायक हैं। यह बच्चे के सर्वांगीण विकास के लिए एक स्वस्थ और समावेशी वातावरण प्रदान करने पर जोर देते हैं।

बच्चे अपने आसपास के वातावरण से बहुत सीखते हैं। पर्यावरण का प्रभाव मानवीय जीवन के सभी पहलुओं पर पड़ता है। ‘पर्यावरण के विकास हेतु ज़रूरी है जैव विविधता की समझ’ लेख बच्चों को पर्यावरण के साथ तादात्म्य बैठाने पर जोर देता है ताकि बच्चे अपने आसपास को जान सकें और

जैव विविधता को समझ सकें। लेख जैव विविधता संवर्धन हेतु गतिविधियों एवं क्रियाकलापों को विद्यालय में कराने की सलाह भी देता है। पर्यावरण अध्ययन आज हमारे पाठ्यक्रम का भी हिस्सा है जिसको गुणवत्तापूर्ण बनाए रखने के लिए उस पर निरंतर विचार-विमर्श और संशोधन किए जाते हैं। ‘पर्यावरण अध्ययन की पाठ्यपुस्तक का समीक्षात्मक अध्ययन’ लेख में लेखक पर्यावरण अध्ययन की पाठ्यपुस्तक पर अपने विचारों और सुझावों को प्रस्तुत करता है।

बच्चे स्कूल में एक व्यवस्थित अध्ययन के अंतर्गत ज्ञान प्राप्त करते हैं लेकिन प्रश्न उन बच्चों के जीवन का है जो किन्हीं कारणों से आज भी स्कूल जाने से वंचित हैं। शिक्षण गुणवत्ता में सुधार और स्कूल न जाने वाले बच्चों को स्कूल से जोड़ने के लिए तेलंगाना सरकार ने ‘बड़ी बाटा’ कार्यक्रम की शुरुआत की। यह शिक्षा का उत्सव किस प्रकार राज्य में शिक्षा के स्तर को बढ़ाने में मददगार साबित होता है, इसकी चर्चा ‘बड़ी बाटा’— तेलंगाना में पाठशाला की नई पुकार’ लेख करता है। शिक्षा के समान अवसरों पर प्रत्येक तबके का एक समान अधिकार है। ‘उड़ीसा में जनजातीय शिक्षा— वर्तमान स्थिति एवं चुनौतियाँ’ लेख उड़ीसा में बसने वाली जनजातीय आबादी की शैक्षिक आवश्यकताओं और समस्याओं की यथार्थपरक स्थिति को पाठकों के सामने प्रस्तुत करता है। समावेशी शिक्षा का हमारा उद्देश्य तभी पूरा हो सकता है जब हम सभी को साथ लेकर चलें और सभी को शैक्षिक उत्थान के बराबर अवसर मुहैया करवाए जाएँ।

शिक्षा के लक्ष्य को प्राप्त करने और शैक्षिक प्रक्रियाओं को समृद्ध बनाने के लिए शोध एक अनिवार्य तत्व है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में विशेष रूप से प्रारंभिक स्तर के लिए जो अनुशंसाएँ की गई हैं, उनके क्रियान्वयन के लिए भारतीय कक्षाओं में शोध को प्रोत्साहित करना होगा। ‘प्राथमिक शालाएँ — शैक्षिक शोध की उर्वर भूमि’ लेख इसी प्रोत्साहन का विश्लेषण प्रस्तुत करना है। लेख ‘कॉर्पोरल पनिशमेंट एक विद्यालयी विमर्श’ शिक्षा के अधिकार को किसी भी प्रकार के कॉर्पोरल पनिशमेंट से मुक्त करते हुए बच्चे के भावी उन्नत भविष्य का निर्माण करने पर बल देता है।

पत्रिका में ‘विशेष’ के अंतर्गत ‘निष्ठा प्रशिक्षण पैकेज’ में से खंड I के छठे माड्यूल ‘शिक्षण, अधिगम और आकलन में आई.सी.टी. (सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी) का समाकलन’ को शामिल किया है, ताकि आप इसे पढ़कर इससे लाभान्वित हों।

आशा है कि आपको यह अंक पसंद आएगा। यदि आपके पत्रिका के संबंध में कोई सुझाव हों तो हमें अवश्य भेजें। हम अपने आगामी अंकों में उन्हें समाहित करने की कोशिश करेंगे।

शुभकामनाओं सहित

अकादमिक संपादक